International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197,
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 1; January 2016; Page No. 83-84

'गज़ल गजर' में व्यंग्य के आयाम

सुनीता रानी

हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

मनोज सोनकर कृत 'गज़ल - गजर' एक उच्चकोटि की व्यंग्य रचना है। ये साठोतरी हिन्दी कविता के प्रगतिशील कवि के रूप में विख्यात हैं। इस गज़ल संग्रह में भी इनके जीवन के सभी पहलू प्रखर रूप से विद्यमान हैं। मनोज जी बाह्य धारातल के साथ ही साथ आंतरिक धरातल पर भी गतिशील हुए हैं। अतः इनकी गज़लों में मर्मस्पर्शी तरलता भी विद्यमान है और प्रभावशाली कलात्मकता भी। इस अधयाय में सामाजिक चेतना को केंद्रित करके इससे जुड़े विभिन्न पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण किया जा रहा है।

समाज में नित्य प्रति घटित होने वाली घटनाओं को देखकर वैसे तो प्रत्येक नागरिक जागरूक है। लेकिन साहित्यकार क्योंकि सहृदय होता है। इसलिए संपूर्ण मानव समाज में साहित्यकार को ही अधिक सजग सचेत, चेतन, विद्रोही आंदोलनकारी व परिवर्तन का मुखिया माना जाता है। सामाजिक चेतना प्रत्येक व्यक्ति में चैतन्य और मूर्त है। शिक्षा भी अभाववश या रूढ़ि से प्रभावित हो कुंठित हो जाती है। इसी से मुक्त रहना तथा कुंठा को अपनी अंतवृत्ति से तिरोहित किए रखना ही सामाजिक चेतना है। मानव की चेतना को परिवर्तित या विकसित करने में परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अंर्तजातिय विवाह, रोजगार संबंधी नीतियां, सरकार द्वारा चलाई गई नीतियों से समाज में आए दिन परिवर्तन से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। मनोज सोनकर के अनुसार कहीं भी सुख नहीं है -

'खत भेजे थे हमने सुख को,चाहे थोड़ी सी ठंडक।
बिना बुलाए थैला थामें, देखा बैरी दुःख आया है।'[१]

समाज के संपूर्ण श्रेत्र में विकास और परस्पर समानता के भाव ही सामाजिक चेतना के स्वरूप को निर्धारित करते हैं। प्राचीन समय में समाज धार्मिक व्यवस्था पर आधारित था। उस समय समाज का विकास चार वर्गों पर आधारित था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य, शुद्र। समाज को गुण व कर्म के आधार पर ही बांटा गया था। परंतु, परिवर्तन समाज का नियम है। जिस कारण बाद में यह व्यवस्था भी परिवर्तित हो गई। समाज में जाति प्रथा प्रचलित हो गई। उस समय स्त्री प्रताड़ना व उपेक्षा की शिकार थी। समाज में उसे कोई स्थान नहीं मिलता था। परंतु समाज-सुधारकों के आंदोलनों के पफलस्वरूप आज स्त्री को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त हैं। वह पुरूष के साथ हर कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। परिवार के बदलते स्वरूप ने भी समाज को प्रभावित किया है।

'दशरथ तो चिंतित बड़े, बन न जाए राम,
बहस खड़ी करते हुए, कई गिनाए काम।'[२]

परिवार समाज की प्रारंभिक संस्थाओं में से एक है। प्रारंभ में संयुक्त परिवार होते थे, परस्पर प्रेम, सद्भाव एवं समानता की विचारधारा थी। परंतु आर्थिक प्रणाली में आए परिवर्तन ने संयुक्त परिवार को तोड़कर एकल परिवार में परिवर्तित कर दिया, जिससे समाज की विचारधारा अत्यधिक प्रभावित हुई। इसीलिए कवि सचेत करते हुए लिखते हैंः-

'हमदर्द मिले झूठे मौके ताक लूटे।
रोए घने जंगल शबाब झरे छूटे।'[३]

भ्रष्टाचार, शोषण, आतंक, अनीति, आपाधापी, आर्थिक प्रतिस्पर्धा जातीय तथा सांप्रदायिक संघर्ष ने समाज की अवधारणा को बदल दिया। मूल्यहीन समाज बौद्धिकता पर केंद्रित हो गया।

मनोज सोनकर ने अपनी गजलों में राजनीतिक तथ्यों पर कटाक्ष किया है। आज के नेता तो अपना उल्लू सीधाा करते हैं। ये लोग आम जनता की भलाई का बहाना बनाकर खूब शोषण करते हैं। आज की राजनीति व्यक्ति को स्वार्थी बना रही है। वर्तमान राजनीति नीतिपरक ढंग से राज्य चलाने की नीति न होकर साम, दाम, दण्ड, भेद किसी भी तरीके से अपनी सत्ता को बनाए रखने तक सीमित है। राजनेता स्वार्थ पूर्ति हेतू हर उन नियमों धर्मो और नीतियों का भूल जाता है, जिसका चुनाव के दौरान चीख-चीखकर ऐलान करता है। आज हमारे देश के राजनीतिज्ञ कुशल राजनेता का मुखौटा लगाकर अपने स्वार्थो की पूर्ति कर रहें हैं। मनोज सोनकर ने राजनेताओं के प्रति सचेत करते हुए लिखा है-

'खाना पीना नया नहीं है, राजा ने यह फरमाया है।
नेता तो सेवक ठहरा, कुछ करोड़ उसने खाया है।''[४]

आज की राजनीति में वही व्यक्ति सफल होता है जिसमें दुश्चरित्र का प्रत्येक लक्षण हो। राजनीति में तो सारे भ्रष्ट इकठ्ठे हुए हैं। जनता को लूटते हैं। कवि की चेतना देखिए-

''चोर चोर मौसेरे भाई, कहते आए बड़े सयाने
सगे हुए दोनों भइया अब, प्रजातंत्र की यह माया है''[५]

आज का नेता जनता को खरीदने, बहकाने और शोषण करने की कला में कुशल है। चाटुकारिता का गुण भी अनिवार्य है। लेकिन राजनीति का खेल तो पैसे का खेल है। बिना धन के राजनीति असम्भव है। आज के समाज में पैसा ही सबकुछ रह गया है। कवि ने इस भ्रष्ट वृति के प्रति व्यंग्य किया है-

'पैसा तो राजा हुआ, जब-जब उसके दास
गलत सही करवा धारे, चले काटता कान।'[६]

देश के भविष्य की बात भुलाकर हमारे नेता छोटे-छोटे स्वार्थ के लिए संसद में हंगामा करते हैं। वे अपने आप को दुध का धुला साबित करने के लिए दूसरों पर कीचड़ उछालते हैं। सामाजिक विकास में नेता बाधक हैं।

जैसे- 'रोटी लागे दूर, नेता बैरी अड़ा।
राजा नहीं फूल, हर मौसम में झड़ा।
रोए अब उपदेश, पाएं चिकना घड़ा।'[७]

भूमण्डलीकरण का दौर भूमण्डलीकरण हो गया है। आज अर्थ को अधिक महत्व दिया जा रहा है। आज व्यक्ति की अस्मिता उसके गुणों से नहीं आर्थिक सम्पन्नता से आंकी जाती है। वर्तमान भौतिकवादी समाज में व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए नैतिक, अनैतिक कार्य करने को तैयार हैं। आज मनुष्य का जीवन अर्थ के बिना परिभाषित ही नहीं किया जा सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के प्रत्येक मोड़ पर अर्थ महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आर्थिक व्यवस्थाओं से जुड़ी समस्याओं का बोलबाला दिन-प्रतिदिन निंरतर बढ़ता ही जा रहा है। परम्परागत निर्धनता की समारित के प्रति कवि जागरूक कर रहें हैं-

'भूख तो पुरानी है, जन-जन की कहानी है।
कुएं विशाल कई, गायब सिपर्फ पानी है।।
कतार बढ़े दिन रात, बेकार दानी है।
तरक्की माने नाश, राजा तो ज्ञानी है।।
आजादी परी बड़ी, गढ़ी इक कहानी है।[८]

अर्थ सभी प्रकार के सुखों का सूचक है, इसलिए इसका जीवन में अत्यधिक महत्व है। परन्तु धन का संग्रह केवल आवश्यकता पूर्ति के लिए होना चाहिए। अर्थ के अनावश्यक महत्व ने चोर बाजारी, लुटखसोट, भ्रष्टाचार आदि का समाज के हर कोने में पहुंचा दिया है। कवि मनोज सोनकर जी चिंतित हैं कि आज आर्थिक परिदृश्य ने मनुष्य के जीवन को बदल दिया है-

'पूंजी का हमला है भारी, लगातार बैरी यह जारी।
डालर रूप अनेकों धारे, चले चलाता अपनी आरी।
दिन तो लागे भीख माँगते, रातें होती जाएं कारी।
गोला गोली रंग जमाए, बोली होती जाए खारी।
रोटी नाच नचाती भागे, शातिर दाबे महल अटारी।'[९]

समाज में धन का वितरण असमान है, जिस कारण धानी अधिक धनी और निर्धन अधिक निर्धन होता जा रहा है। अर्थ की कमी के कारण आज परिवारों में भी तनाव बढ़ गया है। आज का मनुष्य बहुत कम समय में बहुत अधिक पा लेना चाहता है, इसके लिए चाहे उसे कोई भी अनैतिक कर्म करना पड़े। युवाओं का लगातार विदेशों में पलायन करना भी आर्थिक समस्या का कारण है। 'गजल-गजर' में भी आर्थिक समस्या को चित्रित किया गया है। जैसे-

'झोपडी टूटी पडी है, खोपड़ी पफूटी बड़ी है।
एक चेहरा पफूल लाल, याद दरवाजे अड़ी है।
कुरसियों पर चोर बैठे, विपक्ष की भारी लडी है।
दूध के पफूटे घड़े कुछ, वर्षा की लागी झड़ी है
हर जगह बाजार दीखे, रोग डालर की घड़ी है।'[१०]

जिनके पास पैसा नहीं उनकी स्थिति बहुत ही दयनीय होती है। उन लोगों में निरन्तर गरीबी पनप रही है। आज हमारे समाज में भुखमरी है। पैसे की कमी मानव को पशु बना सकती है। मनोज सोनकर जी चिंतित हैं -

'रोटी लीगे दूर
नेता बैरी अड़ा।[११]

मनुष्य इस कमी को पूरा करने के कितना भी तुच्छ कार्य करने के लिए तत्पर रहता है। वर्तमान समाज में पारिवारिक संबंध भी अर्थ के कारण समाप्त होते जा रहे हैं। पारिवारिक व्यवस्था भौतिकवाद के रंग में रंगी हैं। आज अर्थ के आगे सभी रिश्ते झुठे और बेमानी हो गये हैं। आज का मनुष्य बहुत ही स्वार्थी हो गया है। वह अपने सवार्थ को पूरा करने के लिए अपने परिवार को भी छोड़ देता है। आज मानवीय संवेदनाए समाप्त हो चुकी है। सम्बंध स्वार्थपरक हो गए हैं। मनोज सोनकर जी चिंतित हैं-

'गीत तो गड़ने लगे हैं।
रिश्ते अब सड़ने लगे हैं।'[१२]

आत्मीयता के अभाव में आज परिवारों में तनाव बढ़ता जा रहा है। जिस कारण भाई-भाई का, पिता-पुत्र का, पति-पत्नी का, भाई-बहन के रक्त के सम्बन्ध भी खोखले होते जा रहे हैं। कवि ने बुढ़ापे पर व्यंग्य करते हुए लिखा है-

'बेटा हुआ अफसर
चहका बुढ़ापा है।
हाथ लगी पेन्सन
महका बुढ़ापा है।'[१३]

पारिवारिक मर्यादाएं खंडित हो चुकी हैं। संयुक्त परिवार की अवधारणा मां-बाप और संतान तक सिमट गई है। वंश में वृ(के लिए पुत्र जन्म जरूरी है। पुत्र आगे परिवार को बढ़ाता है,पारिवारिक संबंधों में तनाव ने पारिवारिक विघटन के कगार पर लाकर खड़ा कर देता है। हवस में मां अपनी बेटी को बूढ़े के संग ब्याहने को तैयार है। कवि ने इन तथ्यों पर चिंता जताई है।

संदर्भ ग्रन्थ

१. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ६।
२. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० १६।
३. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० २२।
४. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० १०।
५. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ६।
६. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ६।
७. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ५६।
८. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० १५।
९. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ८।
१०. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० २६।
११. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ५६।
१२. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ६४।
१३. मनोज सोनकर'गजल-गजर ' पृ० ६२।